



## प्रगति गुप्ता की कविताएँ

## साहित्यिक विमर्श

### तुम कहते तो...

काश तुम्हारी  
उस अनकही पीडा तक  
मैं पहुंच पाती  
तुम कहते तो.....  
मैं मरहम बन  
उन छिपे घावों को  
सहला जाती  
तुम कहते तो.....  
साथ नहीं चल रही तुम्हारे  
तभी तो कहने को  
कहती हूँ.....  
मौन मुझे भी छूता है  
ये मुझसे बेहतर  
तुम्हें पता है.....  
माना कि सबके  
अपने सुख अपने दुख है  
पर तुम ने खुद के  
दिल को सुना होता.....  
उस निशब्द मौन को  
कहा होता.....  
जो मेरा और तुम्हारा था  
उसको,  
तुम कहते तो.....

### करवट

रिश्तों के करवटें लेते ही  
मुस्कराहटों को सिकुड़ते  
देखो कभी...  
खामोश - सी चुप्पी में  
दबी फुसफुसाहट को  
सुनकर देखो कभी....  
वहीं कहीं छिपी  
अपनी टूटन को जरूर  
समेट कर रखना....  
रिश्तों के करवट लेते ही  
पलकों पर ढाढ़स की  
चादर ओढ़ कर रखना...  
यही हुनर तो जिन्दगी को  
वक्त बेवक्त सिखाना है  
हम सबको कुछ सबक दे  
उसको तो यूँ ही  
निकल जाना है.....

### बेटी की माँ

आज मैं स्वयं को  
सबसे अधिक धनिक मानती  
बेटी की माँ बनते ही  
सृष्टि रचियता को  
धन्यवाद बोलती....  
स्वयं के साथ - साथ



उसने मुझे -  
जीव पोषित करने का,  
अधिकार दिया..  
मैंने बेटी को जन्म दे  
उसे भी, इस सृजन कड़ी में  
संलग्न किया....  
प्रेम, दया ममता  
जैसे भावों से, सँवार उसे  
स्वयं ईश्वर ने उतारा है...  
बेटा जने या बेटी वो

जन्म का अधिकार  
उसे ही सौंपा है...  
ईश्वर के सृजन को  
निखारने का  
अधिकार जिसे हो -  
वो ईश्वर का सहभागी है  
उसको कमतर समझने वाला  
स्वयं अपने पापों का भागी है...  
अपने पापों का भागी है.....

प्रगति गुप्ता  
58, सरदार क्लब स्कीम जोधपुर  
(राजस्थान) 342001  
मोबाइल :09460248348  
:07425834878  
[Pragatigupta.raj@gmail.com](mailto:Pragatigupta.raj@gmail.com)

